बच्चे और खेल

❑ कमलेश चन्द्र जोशी

खेलों का बचपन से अटूट रिश्ता रहा है । विभिन्न तरह के खेल, बच्चों का ऊधम, बड़ों की डांट आदि सारी चीजें ही बचपन का एहसास कराती हैं । यहां पर यह भी कह सकते हैं कि इन सब चीजों के बिना बचपन की कल्पना ही नहीं की जा सकती या दूसरी तरह से कह लें तो ये सारी चीजें ही बचपन में रंग भरती हैं । लेकिन आज के समय में बचपन के रंग हमें उड़े हुए दिखाई देते हैं । अब

सामन्यत: खेलते हुए बच्चों का झुंड हमें नहीं दिखता । अधिकतर बच्चे ट्यूशन व होमवर्क के बोझ से दबे हुए हैं । इसलिए बच्चों के पास न खेलने का समय है और न ही स्कूली पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ अन्य चीजें पढ़ने को । रही सही कसर केबिल चैनल ने पूरी कर दी है । इस तरह से देखें तो हम कह सकते हैं कि बच्चों का बचपन गुम होता जा रहा है ।

उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अगर हम इस बात पर विचार करें कि आज भी बच्चों में पढ़ाई से खेलों के प्रति अधिक

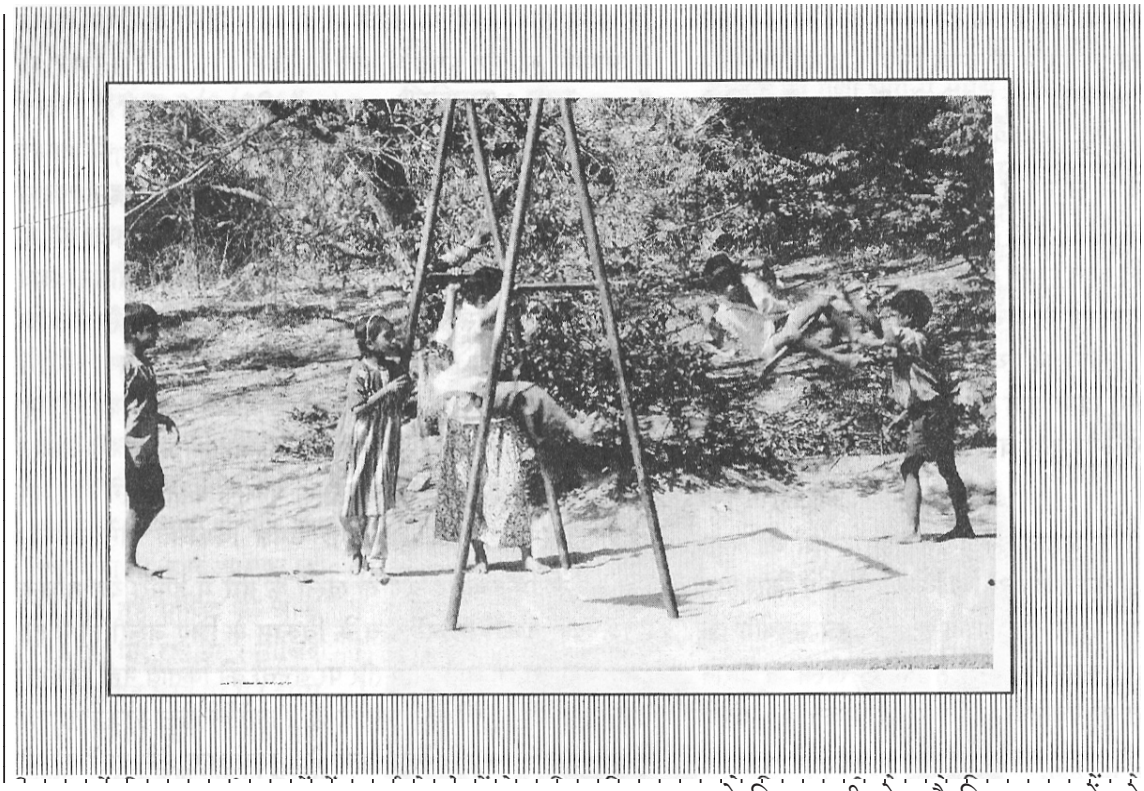

उल्लास क्यों रहता है । तो उसका साफ कारण यह है कि बच्चों के लिए निर्धारित शिक्षा प्रणाली बेहद नीरस व उबाऊ है । हमें यह भी मानना पड़ेगा कि विद्यालयों के इस नीरस वातावरण में खेल बच्चों में नई ऊर्जा का संचार करते हैं । यहां पर हम यह भी कह सकते हैं कि खेल बच्चों में एक नई स्फूर्ति का अहसास कराते हैं। अब हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि बच्चे जब शुरूआत में विद्यालय आते हैं तो उनके लिए वहां पर खेलों का क्या महत्व है? इन खेल प्रक्रियाओं के दौरान बच्चे क्या-क्या सीखते हैं ? और खेल बच्चों की शारीरिक व मानसिक विकास में किस तरह सहायक हैं?

सबसे पहले हम इस बात पर गौर करें जहां हमारे कस्बे-देहातों में बच्चे स्कूल नहीं जाते (हालांकि अब गांव कस्बों में भी तथाकथित नर्सरी माण्टेसरी स्कूल खुल गये हैं, लेकिन हम वहां की चर्चा कर रहे हैं जहां ऐसी व्यवस्था नहीं है) वहां के बच्चे अपने पास-पड़ोस के बच्चों से दोस्ती खेलों के माध्यम से ही करते हैं । वे अपने पास-पड़ोस के बच्चों के घर खेलने के मकसद से ही जाते हैं। इस तरह से हम देखें तो खेल बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया का बुनियादी अंग हैं।

इसके बाद जब बच्चे स्कूल में जाते हैं तो उनको अपने गांवों कस्बों के अन्य बच्चों से परिचय करना होता है, नये दोस्त बनाने होते हैं । अब यहां पर हम सोचें कि जब बच्चों को नये दोस्त बनाने हों तो हमें क्या करना चाहिये ? तो हमें एक उत्तर मिलता है कि उन्हें समूहों में काम करने व आपस में घुलने मिलने का मौका दिया जाना चाहिये । समूह में काम करने के मौके देने के लिए हमारे लिए जरूरी होता है कि हम बच्चों को एक साथ बिठाकर उनके साथ कुछ खेल करवायें जिनके द्वारा बच्चे सहज रूप से एक दूसरे के साथ घुल मिल सकें । यहां पर हमें यह जानना आवश्यक है कि जब बच्चे आपस में घुल मिलकर काम करेंगे तो उनमें एक समूह की भावना भी पनपेगी । इस समूह भावना में हमें एक चीज यह देखने को मिलती है कि हर समूह में बच्चे में कोई गुण है तो किसी में कोई। इस तरह से हम यह कह सकते हैं कि एक समूह में काम करने से बच्चे एक दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं । लेकिन यहां पर हमें यह लगता है जिस तरह से हम बड़े अपने जैसे विचारों के लोगों को दोस्त बनाना पसन्द करते हैं, उनके साथ उठना बैठना पसन्द करते हैं । इसी तरह से बच्चे भी अपनी तरह के समान विचारों वाले बच्चों को मित्र बनाना पसन्द करते हैं । इसलिए हमारे लिए जरूरी है कि हम बच्चों की मनोभावनाओं को समझें, उन्हें भी

अपने दोस्त बनाने के निर्णय लेने दें ।

आइये, फिर खेलों की तरफ मुड़ें । खेलों में समूह बनने की बात चल रही थी । अब थोड़ा इन खेलों की प्रक्रिया में विस्तार से चलें। यह बात पहले ही स्पष्ट हो चुकी है कि खेल बच्चों के समाजीकरण की प्रथम पाठशाला है । अब हम बच्चों के स्थानीय खेलों की तरफ आते हैं । थोड़ा सा स्थानीय खेलों के बारे में स्पष्टता लाना भी जरूरी है। स्थानीय खेलों की महत्वपूर्ण बात यह है कि इनमें हमें कोई बाहरी तामझाम जुटाने की जरूरत नहीं पड़ती। बाहरी तामझाम के मायने यहां पर यह हैं कि इन खेलों के लिए हमें कुछ भी खरीदना नहीं पड़ता । और न ही इनके लिए कोई बड़े से मैदान की जरूरत पड़ती है। हालांकि अब इन खेलों की परम्परा लुप्त होती जा रही है । इनकी जगह आधुनिक खेलों जैसे-क्रिकेट, बैडमिण्टन, हाकी, फुटबाल आदि ने ले ली है और ये लोकप्रिय होते जा रहे हैं। जब कि स्थानीय खेल जैसे आइस-पाइस, खो-खो, विष-अमृत, छुपम-छू आदि खेल गायब से ही हो गये हैं। अब इन खेलों को खेलते हुए गांव मुहल्लों के बच्चे कम ही दिखते हैं । यह भी सच बात है कि अब टेलीविजन ज्यादा लोकप्रिय हो गया है । इन स्थानीय खेलों की दूसरी खास बात यह है कि देश के विभिन्न प्रान्तों में कुछ अलग नामों से और कुछ बदले हुये रूप के साथ यही खेल खेले जाते हैं।

खेलों में बच्चों के जुड़ाव को देखकर हम बच्चों की बहुत सी क्षमताओं को समझ सकते हैं जैसे कि किस बालक में किस तरह की प्रवृत्ति है ? किसमें नेतृत्व की भावना है ? किसमें सहयोग की भावना है आदि ? यहां कहने का अर्थ है कि इन खेलों के दौरान ही हम बच्चों में बहुत सी प्रवृत्तियों को उभार भी सकते हैं । खेलों में कायदे कानून होते हैं । इन्हें बच्चों को मानना पड़ता है चाहे वह छोटा बच्चा हो या बड़ा । इन कायदे कानूनों को मानने के लिए बच्चे को अपने मस्तिष्क को सतर्क रखना पड़ता है । इसके अलावा उन्हें तुरन्त कुछ निर्णय लेने पड़ते हैं । दौड़-भाग तो होती ही है । इस तरह से हम यह भी कह सकते हैं कि खेल बच्चों में शारीरिक विकास के अलावा मानसिक विकास भी करते हैं ।

इसी तरह से अपने विद्यालयों में हम देखें तो खेल वहां पढ़ाई के नीरस वातावरण को तोड़ते हैं । यहां हमें याद पड़ता है कि बच्चे अपने खेल की घंटी का बेसब्री से इंतजार करते हैं । अगर इस बात का हमें अनुभव लेना है तो सबसे अच्छा तरीका यह है कि किसी प्राथमिक विद्यालय में हम कभी कुछ समय बितायें । वहां पर हम पायेंगे कि उन्हें इंटरवल का भी बहुत इंतजार रहता है। इस समय में वे अपना भोजन जल्दी निपटाकर खेल कार्यों में लग जाते हैं। छुट्टी में भी वे खेलना चाहते हैं लेकिन तब घर जाने की जल्दी भी होती है । इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि खेल विद्यालय के नीरस वातावरण में बच्चों को ताजगी का एहसास कराते हैं । हां, यह अलग बात है कि कुछ ऐसे स्कूल भी हैं जो बच्चों को उनकी रूचियों के अनुसार खुशियों का अहसास भी कराते है ।

खेल के दौरान बच्चे धीरे-धीरे अपने खेल के समूह को तय करते हैं कि उन्हें किस समूह के साथ खेलना है ? किसके साथ खेलना है ? आदि। यहां पर हमें यह बल देने की जरूरत नहीं पड़ती कि उनके साथ खेलो या उसके साथ नही। खेलों के दौरान बच्चों में आपसी छुट-पुट झगड़े भी होते हैं। उन्हें बच्चे स्वयं सुलझाते भी हैं । यहां पर कभी-कभी शिक्षक/बड़ों की जरूरत पड़ती हैं । खेलों के बारे में निर्णय लेने से बच्चों में स्व: निर्णय लेने की क्षमता उपजती है । वहां पर हमारा कोई दखल नहीं होता है । इस तरह से हम कह सकते हैं कि बच्चों के व्यक्तित्व के संज्ञानेत्तर पक्ष को भी उभरने का मौका मिलता है । इसी तरह से खेलों के दौरान बच्चे स्वयं खेलते हुये उस प्रक्रिया का प्रबंधन भी स्वयं करते हैं जैसे कि वे अपने आप टीम बनाते हैं, कप्तान चुनते हैं, कौन क्या करेगा? आदि बातें तय करते हैं । उक्त बातों के बारे में हमारा यह सोचना है कि हमें बच्चों के इन अवलोकनों को महसूस करने की जरूरत पड़ती है । जब हम इन सब चीजों को महसूस करने लगेंगे तो हमारे अन्दर सही शिक्षा की कुछ-कुछ समझ विकसित होने लगेगी।

कुल मिलाकर बच्चों के खेलों के बारे में हमारा यह सोचना है कि खेल बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए जरूरी तो है ही। इसके अलावा जो बातें आम तौर पर बच्चों की किताबें नहीं सिखाती उन्हें खेलों के द्वारा बच्चे सीखते हैं । क्योंकि खेल प्राकृतिक रूप से ही गतिशील व सामूहिक क्रिया है। उसमें भाग लेने वाले को भी कुछ करना पड़ता है । उनके भी कुछ दायित्व होते हैं । उसे उन्हें निभाना पड़ता है । अगर वे उनका निर्वाह नहीं करेंगे तो खेल की प्रक्रिया ही गड़बड़ा जायेगी । खेलों के द्वारा यह बात भी पुख्ता होती है कि खेलों के दौरान जो चीजें सीखी जाती हैं उन्हें बच्चे सहज रूप से सीखते हैं । उन्हें सीखने में दबाव नहीं महसूस होता है । यहां पर यह बात भी पक्की होती है कि सहज रूप से चलने वाली प्रक्रिया में बच्चों की विभिन्न क्षमताएं स्वयं प्रस्फुटित होती हैं क्योंकि स्वयं चलने वाली प्रक्रिया स्वाभाविक होती है। इस प्रक्रिया में बच्चों पर कोई दबाव नहीं होता । इसलिए यहां पर हमें यह भी नोट करना चाहिये कि सीखना एक सहज प्रक्रिया है । बच्चों को सिखाने के लिए कोई जोर जबरदस्ती की जरूरत नहीं है । यह बात यहां पर स्पष्ट हो जाती है । ◆